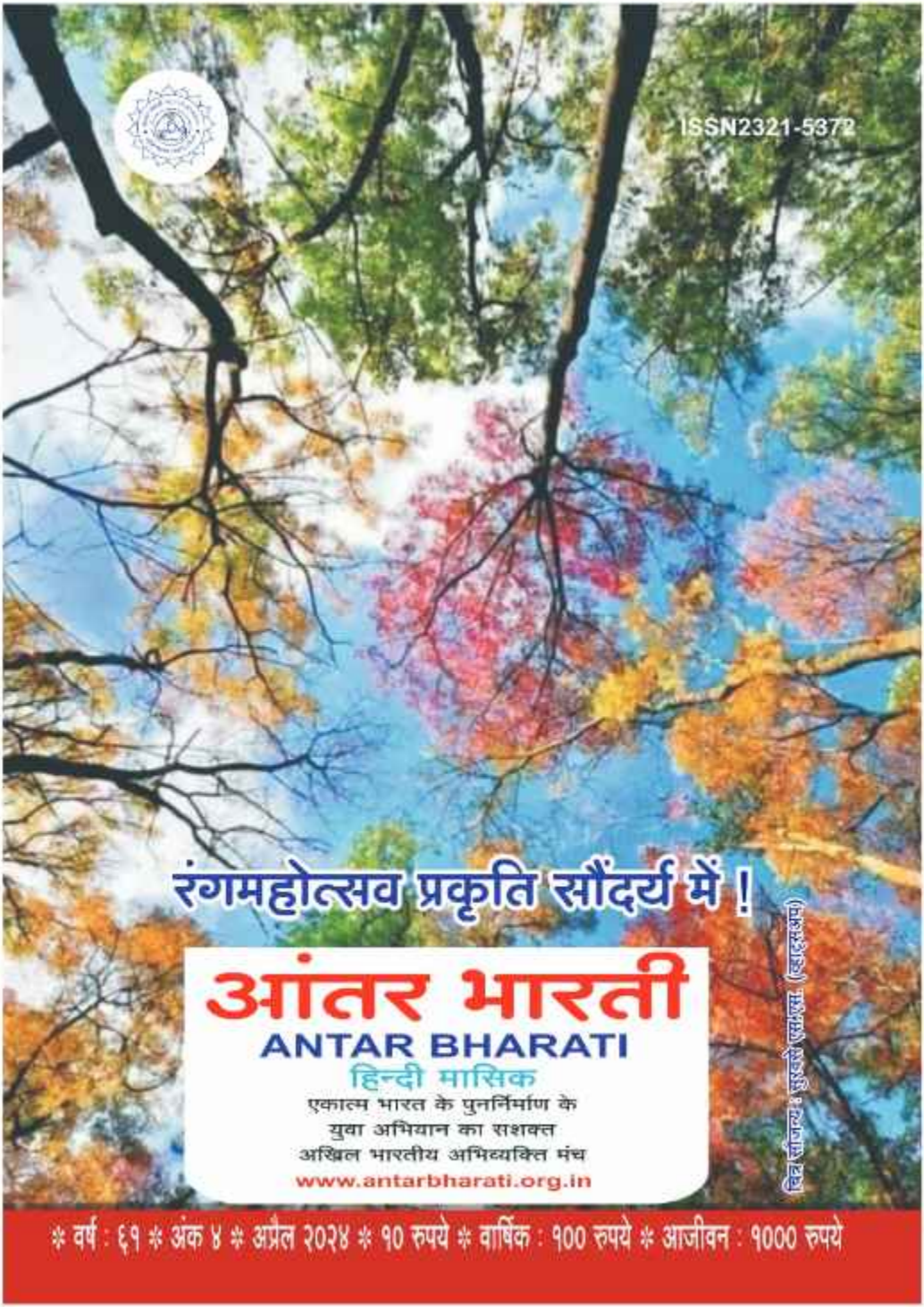

ISSN2321-5372

रंगमहोत्सव प्रकृति सौंदर्य में !

अंतर भारती

ANTAR BHARATI

हिन्दी मासिक

एकात्म भारत के पुनर्निर्माण के
युवा अभियान का सशक्त
अखिल भारतीय अभिव्यक्ति मंच

www.antarbharati.org.in

* वर्ष : ६१ * अंक ४ * अप्रैल २०२४ * १० रुपये * वार्षिक : १०० रुपये * आजीवन : १००० रुपये

किसानों की आत्महत्या- संवेदनार्थ लाखों का १९ मार्च को उपवास - किसानपुत्र आंदोलन- कुछ झांकियाँ !

अंबाजोगाई

चालीसगांव

अमरावती

पुणे

आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

आंतर भारती स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

प्रेरक, संवर्धक संपादक
स्व. यदुनाथ थत्ते

संस्थाध्यक्ष/पूर्व संपादक
स्व. सदाविजय आर्य

■ कार्यकारी संपादक
प्राचार्य सुभाष शास्त्री
सुदीक्षा, ९ इंडस्ट्रीयल इस्टेट
होटगी रोड,
सोलापूर - ४१३००३ (महा.)
मो. ९८९०६११४०१
E-mail : subhashvshastri@gmail.com

■ प्रधान संपादक
डॉ. सी. जय शंकर बाबु
अध्यक्ष : हिन्दी विभाग,
पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेट,
पुदुच्चेरी-६०५०१४
मो. ९४४२०७१४०७
E-mail : editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती साने गुरूजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति को सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है ।

विश्वस्त - कोषाध्यक्ष
डॉ. उमाकांत चनशेट्टी
मु.पो. बोरामणी ४१३२३८
जि.सोलापूर-४१३००३ (महा)
मो. ९५५२६३७९००

Visit US : antarbharati.org.in

प्रबंध कार्यालय
आन्तर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहा. (महा.) ४१३५२२

संपादक
ज्योतिराव लढके

मार्गदर्शक
■ डॉ. इरेश स्वामी ■ अमर हबीब ■ पांडुरंग नाडकर्णी ■

सहयोगी - मधुश्री आर्य

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक/संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें ।

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji Committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the potentiality, Skills, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक पत्रिका) प्रकाशक अध्यक्ष, आंतर भारती द्वारा मुद्रक मॅजिक पब्लिकेशंस लातूर के लिए मुद्रित कर आंतर भारती संकुल औरादशहाजानी से प्रकाशित की ।

आंतर भारती - अप्रैल - २०२४
इस अंक में

१. संशयात्मा विनश्यति	-	३
२. वेमना का तत्व-चिंतन	-	५
३. महात्मा बसवेश्वर वचन	-	६
४. तिरुवल्लुवर वाणी तिरुक्कुरल	-	७
५. श्याम की 'मां' की छवि से परे साने गुरुजी	-	८
६. तुम चलो तो सही।	-	९
७. किसानों की आत्महत्या के लिये ----	-	१०
८. लक्ष्य स्पष्ट हो तो जीवन को दिशा मिलती है	-	११
९. श्रीरामपुर में आंतर भारती की शाखा की स्थापना	-	१२
१०. ''देश के समक्ष चुनौतियां और हम''	-	१३
११. देश को देश बनाना सबसे बड़ी चुनौती	-	१४
१२. यही वह दर्शन है जो जीवन को कृतज्ञ बनाता है	-	१५
१३. साहसी विवाह की बात	-	१६
१४. सर्वधर्म-समभाव = सहयोग संवाद	-	२१
१५. समाचार भारती	-	२३
१६. आम सभा सूचना	-	२४

संपादकीय

संशयात्मा विनश्यति

– डॉ. सी. जय शंकर बाबु

''जो राजा प्रजा को पवित्र देखना चाहता है, उसे स्वयं संशयातीत रहना चाहिए'' साने गुरुजी की इस पंक्ति का आशय बहुत स्पष्ट है और इसका एक सुदृढ शास्त्रीय आधार भी मिल जाता है गीता में। गीताचार्य का कथन है–

''अजश्चाश्रद्दधानश्च संशमात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः

गीता की इस उक्ति का आशय यह है कि अज्ञानी लोगों में श्रदधा और ज्ञान नहीं होता है और जो संदेहास्पद स्वभाव के होते हैं ऐसी आत्माओं का पतन होता है। ऐसी संशयात्माओं के लिए न इह लोक में न परलोक में सुख मिलता है। साने गुरु जी कहते हैं कि प्रजा के सामने धुले हुए चावल की तरह सचरित्रता होनी पाहिए। भारतीय संतों और वीरों के ऐतिहासिक उदाहरण भी स्पष्ट करते हुए पौराणिक गाथाओं से संशयातीतता, ध्येयनिष्ठा और त्याग जैसे गुण अपनाने पर बल देते हैं। आज की पीढ़ि को इन सद्गुणों की और उन्मुख करने में साने गुरुजी के चिंतन को युवा पीढि तक पहुंचाने के लिए हमें हर तरह के कदम उठाने की आवश्यकता है। साने गुरुजी की १२५ वी जयंती के उपलक्ष्य में बाल व युवा संस्कारों के लिए हमें विस्तृत गतिविधियों को अपनाने की आवश्यकता है।

ध्येयनिष्ठा की पराकाष्ठा पर अपने विचार प्रकट करते हुए अपनी कृति 'भारतीय संस्कृति में साने गुरुजी यह भी कहते हैं कि परतंत्रता के सर्वभक्षक काल में भी भारत ने हमेशा ऐसे ध्येयनिष्ठ मनुष्यों को जन्म दिया है जो सबके हृदय में श्रद्धा का स्थान प्राप्त करने योग्य है। ध्येयनिष्ठा के महत्व को समझाने के क्रम में कड़े पौराणिक उदाहरणों के साथ–साथ ऐतिहासिक उदाहरण भी देते हैं। भगवान बुद्ध, संत नामदेव, तुलसीदास, कमाल, कबीरदास, चैतन्य, मौरा, पन्ना, राजा अशोक, राजा हर्ष, छत्रपति शिवाजी, दादाजी कोंडदेव, बाजी प्रभू, तानाजी, संभाजी, बल्लाल, दत्ताजी, पेशवा प्रथम माधवराव, न्यायमूर्ति रामशास्त्री, देवी अहिल्याबाई, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे आदि की ध्येयनिष्ठा का वे उदाहरण देते हैं।

ऐसे तमाम उदाहरण देते हुए स्पष्ट करते हुए परतंत्रता जैसे सर्वभक्षक काल में ध्येयनिष्ठा, त्याग के बल पर हममें ऊर्जा भरने में संतों, शासकों के जीवन की कई घटनाओं का उल्लेख करनेवाले साने गुरुजी भारतीय संस्कृति की स्वातंत्र्य चेतना को हर दिल में–दिमाग में भरने की कोशिश करते

हुए, राजा के लिए अपेक्षित गुणी की ओर बल देते हुए हमें इंगित करते हैं। भारतीय संस्कृति के प्रति प्रतिबद्ध और दक्ष शासक कोई भी त्याग और ध्येयनिष्ठा के लिए समर्पित होकर अपना स्वभाव और चरित्र सदा पवित्र रखते हुए जनहित में ही पूरी निष्ठा के साथ लगे रहता है। ध्येयवादी प्रेरणा देने के क्रम में साने गुरुजी लिखते हैं हम कहेंगे वंदेमातरम्, स्वराज्य, इन्कलाब जिन्दाबाद । हम कहेंगे साम्राज्यवाद का नाश हो। पूँजीवाद का नाश हो। फिर चाहे उस शरीर का कोई कुछ करे। हमारा ध्येय हमारे जीवन में प्रकट होगा। जो होठों पर, वहीं मन में। जो हाथ में, वही आँखों में। भगवान के स्मरण का अर्थ है सारी मानव जाति का स्मरण । जो सारे मनुष्यों का घर है, वही नारायण का स्वरूप है। सारी मानव जाति को सुखी करने की इच्छा करना मानो भगवान का झण्डा फहराना है।''

वर्तमान दौर की कई विडंबनाओं के लिए सार्थक समाधान देने में आज भी साने गुरुजी का चिंतन और प्रेरणात्मक हिदायतें कई दृष्टियों से प्रासंगिक हैं। उनके हृदय की वाणी में भारतीय संस्कृति की आत्मा झंकृत होती है। उनकी वाणी व्यापक स्तर पर बाल व युवा के मानस तक पहुँचाने के कार्यों में गति लाने के लिए १२५वीं जयंति कई दृष्टियों से हमें प्रेरित करती है। 'आंतर भारती के समस्त निष्ठावान कार्यकर्ता युवा पीढ़ि में साने गुरुजी के संस्कार विकसित करने के हर कोई कदम उठाएँ जिससे समर्पण भावना, ध्येयनिष्ठा, त्याग से कई सद्गुण विकसित हो, जिससे समाज के हित में वे कार्य करें। साने गुरुजी की वाणी संशयात्मा की जो पूर्ववाणी देती है, वही गीता भी पुष्टि करती है। जन गण मन के हित में कार्य करनेवाली पीढ़ि के विकास में साने गुरुजी की वाणी सदा सक्षम है। उसे जनमानस में अंकित करने के उपाय अभी अपेक्षित हैं। आइए, हम साने गुरुजी की वाणी को जन-जन की आत्मा की कृति बनाने के सार्थक प्रयास करेंगे।

चैत्र नवरात्र, पापमोचनी एकादशी उगादि, रमजान, रामनवमी, आम्बेडकर जयंती, तमिल नववर्ष, महावीर जयंति , उत्कल दिवस (१) अप्रैल), विश्व स्वास्थ्य दिवस (७ अप्रैल), विश्व होमियोपथि दिवस (१० अप्रैल), राष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवस (१८) अप्रैल), राष्ट्रीय पालतू जानवर दिवस (११ अप्रैल), विश्व विरासत दिवस (१८ अप्रैल), पृथ्वी दिवस (२२ अप्रैल), विश्व पुस्तक एवं प्रतिलिप्याधिकार दिवस (२३ अप्रैल), विश्व पंचायतीराज दिवस (२४ अप्रैल) आदि के अवसर पर अग्रिम हार्दिक शुभकामनाओं सहित..

वेमना का तत्व-चिंतन

तेलुगु मूल – योगी वेमना

(देवनागरी लिप्यंतरण, हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या – डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

''देवपूजलंदु देवालयमुलंदु
देवुडंट जेप्पि तेरुवुजूपि
तेलिय विश्वमेल्ल देवादिदेवुडे
विश्वदाभिराम विनुरवेम ।''

देव पूजाओं में, मंदिरों में
ईश्वर की उपस्थिति बताकर, जाने का रास्ता दिखाकर
सच्चाई है कि समूचे विश्व में परमेश्वर है
विश्वदाभिराम । सुनरे वेमा ।

व्याख्या – पूजाओं में , मंदिरों में ईश्वर होने की बात बताते हैं, ईश्वर तक पहुँचने के मार्ग बताते हैं। मगर वास्तविकता यह है कि समूचे विश्व में परमेश्वर फैले हुए हैं। वेमना का मानना है कि जब समूचे ब्रह्मांड में ईश्वर फैले हुए हैं, पूजाओं और मंदिरों में होने की बात कहना और ईश्वर तक पहुँच तक पहुँचने का रास्ता बताना बेमानी है। ईश्वर सर्वांतर्यामी है, इस सचाई को सभी समझने की अपेक्षा वे करते हैं।

महात्मा बसवेश्वर वचन

।। मूळ कन्नड वचन ।।

अप्पनु नम्म मादार चन्नय्या,
बोप्पनु नम्म डोहर कक्कय्या
चिक्कय्य निम्मय्य काणय्या,
अण्ण नम्म किन्नरि बोमय्य
एन्ननेतक्करियिरि कूडल संगय्य ।

हिंदी काव्यानुवाद

बाप हमारा महार चन्नय्य,
दादा हमारा चिक्कय्य,
बडा भाई हमारा किन्नरी बोम्मय्य,
चाचा हमारा चिक्कय्य
मुझे समझते क्यों नहीं कूडल संगम देव ।

भाष्य

सर्व जातिधर्म समभाव की सुंदर भावना इन पांक्तियों में व्यक्त हुअी है ।
कर्माधिष्ठित समाज रचना का पुरस्कार बसवेश्वर करते हुए कहते हैं, मैं महार चन्नय्य का बाप, ढोर कक्कय्या को अपना दादा, अन्य जाति वाले चिक्कय्य को चाचा तथा किन्नरी बोमय्या को अपना बडा भाई मानता हूँ। जाति धर्मविरहित समाज रचना का समर्थन बसवेश्वर करते हैं ।

डॉ इरेश सदाशिव स्वामी
विद्या, १२ ब्रह्मचैतन्य नगर,
विजयपुर रस्ता, सोलापूर–४१३००४
भ्रमण : ९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी तिरुक्कुरल

तमिल मूल – संत तिरुवल्लुवर

(देवनागरी लिप्यंतरण, एवं हिंदी हाइकु
अनुवाद – डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

प्रथम खंड – अरत्तुपाल (धर्म खंड)
तुरवरवियल् (संन्यास–धर्म)
अध्याय २७. तवम (तप)

कूट्रम कूदितलुम् कैकूडुम् नोटलिन्
आट्रल् तलैप्पट् टवर्क्। (कुरल २६९)

तप से शक्ति, तापसी बनता है
मृत्युंजय भी ।

भावार्थ : तप करने वाला तपोबल से सर्वशक्तिमान बन जाता है। वह अपने प्राण काल से भी बचा सकता है, अर्थात् वह मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर लेता है। तिरुवल्लुवर का मानना है कि तपस्वी अपनी तपस्या से जो शक्तियाँ हासिल करता है, वह अपनी जान बचाने में भी सक्षम होता है।

इलर् पलरागिय कारणम् नोरपार्
शिनर् पलर् नोलादवर् । (कुरल २७०)

लपी है कई, दुःख बढ़ा, कम हैं
तपी, सुखी भी ।

भावार्थ – दीन–दुखियों की अधिकता है लोक में, क्योंकि तप करने वालों की कमी है। तपस्साधना से सुख हासिल करने वाले कम हैं। तिरुवल्लुवर का मानना है कि तप न करने वालों की संख्या अधिक होने की वजह से दुखी लोगों की संख्या अधिक है, तप करने वाले सुखी लोगों की संख्या कम है।

साने गुरुजी के शतकोत्तर रजतमहोत्सव वर्ष के निमित्त से

श्याम की 'मां' की छवि से परे साने गुरुजी

–अंजली कुलकर्णी, पुणे

दलित श्रमिक आंदोलन में योगदान : दलित श्रमिक आंदोलन में साने गुरुजी के योगदान को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया। अपने माता–पिता के संस्कारों के कारण सानेगुरुजी में बचपन से ही कड़ी मेहनत करनेवालों के प्रति संवेदना पैदा हुई थी। गांधी–विनोबा, मार्क्स के अध्ययन से इस भावना को व्यापक मानवतावादी अधिष्ठान मिला। उन्हें इसमें कोई संदेह नहीं था कि अमीर और मजदूरों के बीच का रिश्ता शोषक–शोषितों का है। उनका मानना था कि यदि इन संबंधों में बदलाव लाना है तो संघर्ष करना होगा। इसीलिए उन्होंने १९३८ से १९४० के बीच खानदेश में किसानों और मजदूरों के विभिन्न संघर्षों में सक्रिय रूप से भाग लिया। दिसंबर १९३६ में फैजपुर में आयोजित सम्मेलन में १५००० किसानों ने भाग लिया। सम्मेलन के बाद खानदेश में जगह–जगह किसानों की परिषदें आयोजित होने लगीं। चालीसगाँव में गुरुजी ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। १९३७ के आसपास धुले, अमलनेर, जलगांव, चालीसगांव आदि में मिल मजदूरों के संयुक्त खानदेश मजदूर संघ की स्थापना की गई। अक्टूबर १९३६ में इस महासंघ का एक सम्मेलन धुले में हुआ। इसमें कांग्रेस के तिरंगे के साथ लाल बावटा(झंडा) भी लगा दिया गया और वहां उससे झगड़ा हो गया। उस सत्र में कांग्रेस मंत्रिमंडल को बधाई देने वाला एक प्रस्ताव था, साथ ही ट्रेड यूनियनों पर से प्रतिबंध न हटाने के लिए कांग्रेस की निंदा करने वाला एक प्रस्ताव भी था।

साल १९३८ में गुरुजी ने कांग्रेस अखबार शुरू किया, जिसके पहले अंक के संपादकीय में गुरुजी की भूमिका साफ नजर आती है। इसमें उन्होंने लिखा है कि ''साने गुरूजी इसलिए उपवास कर रहे हैं क्योंकि खादीधारक नहीं बढ़ रहे हैं और इसलिए भी उपवास कर रहे हैं। क्योंकि महाराष्ट्र ने अभी तक श्रमिकों का मुद्दा नहीं उठाया है। बार बार उपवास करना पागलपन और अहंकार हो सकता है; लेकिन यह खादी को प्रेमपूर्वक अपनानेवाला और श्रमिकों में जुनून के साथ शामिल होनेवाला एक विचित्र प्राणी थे साने गुरुजी।'' बेशक, यह स्थिति कांग्रेस के स्थानीय पदाधिकारियों को पसंद नहीं थी। श्रमिकों के वेतन में वृद्धि को लेकर उनके बीच दरार पैदा हो गई और यह दरार बढ़ती चली गई उन्होंने किसानों और श्रमिकों को न्याय दिलाने के लिए कांग्रेस का ध्यान आकर्षित करने के कई प्रयास किए। लेकिन कांग्रेस के नेताओं ने उन्हें

कम्युनिस्टवादी या कम्युनिस्टों द्वारा धोखा दिया गया एक कमजोर व्यक्तित्व कहकर खारिज कर दिया। एखाद स्थिति में वस्तुत: व्यक्ति कोई निर्णय लेता है, जो बाद में गलत निर्णय साबित हो सकता है। इससे उसकी धारणा पर संदेह नहीं कर सकते। हालांकि साने गुरुजी के साथ भी यही हुआ। वास्तव में, गुरुजी ने कम्युनिस्टों से संपर्क बंद करके अपनी गलती सुधारी थी। वह कांग्रेस को अपनी मां समान मानते थे। .वर्ष १९३७ में धूले के साप्ताहिक भारत में उनके द्वारा लिखा गया एक लेख उनकी मन:स्थिति को दर्शाता है. उन्होंने लिखा था कि, कांग्रेस की महानता के कारण, इसने एक निश्चित वर्ग, एक निश्चित धर्म के सीमित लोग दोष देते हैं।उसमें ब्राह्मणों को देख अंबेडकर नाराज़ होते है।जीना इसलिए नाराज़ हैं क्योंकि वह हिंदुओं का हैं, बंगाल के जातीय मुसलमान उन्हें हिंदूसमर्थक कहते हैं जबकि महाराष्ट्र के जातीय हिंदू उन्हें मुस्लिमसमर्थक कहते हैं। सनातनी इसलिए रोते हैं क्योंकि कांग्रेस वैश्विक है जबकि कम्युनिस्ट इसलिए नाराज़ होते हैं क्योंकि उन्हें उसमें शेटजी नज़र आते हैं। कांग्रेस का असली स्वरूप क्या है? कांग्रेस एक होमकुंड है, जो कोई भी इस होमकुंड में गिरता है, न तो शेटजी और न ही भट्टजी जीवित रहते हैं। कांग्रेस सभी के कल्याण की सोच रही है और सभी के कल्याण के लिए वह सभी को यज्ञदीक्षा दे रही है.. मुझे लगता है कि यह कांग्रेस मां है. इस लेख के बारे में चैत्रा रेडकर का कहना है कि एक तरफ उनकी कांग्रेस के बारे में भूमिका एवं अपेक्षाएं हैं । दूसरी ओर कम्युनिस्टों के करीब जाने की मनोवस्था है। **(अपूर्ण)**

तुम चलो तो सही।

राह में मुश्किल होगी हजार,
तुम दो कदम बढाओ तो सही,
हो जाएगा हर सपना साकार,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

मुश्किल है पर इतना भी नहीं,
कि तू कर ना सके,
दूर है मंजिल लेकिन इतनी भी नहीं,
कि तु पा ना सके,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा,
तुम्हारा भी सत्कार होगा,
तुम कुछ लिखो तो सही,
तुम कुछ आगे पढ़ो तो सही,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

सपनों के सागर में कब तक गोते लगाते रहोगे,
तुम एक राह चुनो तो सही,
तुम उठो तो सही, तुम कुछ करो तो सही,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

कुछ ना मिला तो कुछ सीख जाओगे,
जिंदगी का अनुभव साथ ले जाओगे,
गिरते पड़ते संभल जाओगे,
फिर एक बार तुम जीत जाओगे।
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

व्हाटसअप से साभार

किसानों की आत्महत्या के लिये जगी संवेदना लाखों ने किया उपवास, सैंकडों जगह अनशन

१९८६ के १९ मार्च को साहेबराव करपे के पूरे परिवार ने सामूहिक आत्महत्या की थी। इस घटना ने न सिर्फ महाराष्ट्र को बल्कि पूरे देश को झिन्झोड के रख दिया था। मरते समय साहेबराव ने सरकार से गुजारिश की थी कि, सरकार किसानों के संकट को समझे और किसानों की हालात सुधारने के लिये कारगर कदम उठायें। ३८ बरस बीत गये लेकिन किसानों की हालात में कोई फरक नहीं आया। बल्कि हालात बद से बदतर होते गये। किसानों की आत्महत्याएं रुकने का नाम नहीं लेती।किसानों की आत्महत्याओं का आकडा हर साल बढता जा रहा है। गत वर्ष (२०२३) लगभग १२ हजार किसानों को प्राणत्याग करना पडा । चुनाव में लाभ के लिये सरकार ने इस वर्ष जानबूझ कर फसलों के दाम गिराये।कपास, सोयाबीन, अनाज, प्याज, दलहन के दाम बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गये हैं। किसानों के बचे रोजगार के लिये भटक रहें हैं। इन कारणों से किसानों में और किसानपुत्रों में अस्वस्थता है। दूसरी ओर सरकार का किसानों के प्रति क्रूर व्यवहार, विरोधी दलों में अभ्यास का अभाव और दायित्व-हीनता, मिडिया की किसानों के प्रति संवेदनशून्यता। 'इसी के साथ सामान्य लोगों में चुनाव आचारसंहिता का भय ऐसी विपरीत हालात में १९ मार्च को लाखों लोगों ने व्यक्तिगत अन्नत्याग अर्थात एक दिन का उपवास किया।। सैंकडों जगह पर सामुहिक अनशन या समापन कार्यक्रम किये गये। यह उपवास चंद्रपूर से लेकर कोल्हापूर तक के लगभग सभी जिलों में किया गया। अमरावती, यवतमाल, अकोला, नागपूर, चंद्रपूर, बुलढाणा, बीड, संभाजीनगर, परभणी, हिंगोली, नांदेड, लातूर, धुलिया, जळगाव, पुणे, मुंबई आदि जिलों में अन्नत्याग में बडे पैमाने पर लोगों ने हिस्सा लिया। अन्नत्याग कार्यक्रम में कई संगठनों का सक्रिय सहभाग था।

देश-विदेश में भी अन्नत्याग

जानकारी मिली है कि सतीश गिरीधरराव ताथोड ने कॅनेडा के टेक्सास प्रांत में ब्राम्प्टन में अन्नत्याग किया।अन्य और जगहों पर भी उपवास होने के समाचार हैं। राजस्थान के जयपूर में कौशल सत्यार्थी ने भी अन्नत्याग किया।

परभणी में पदयात्रा

किसानपुत्र सुभाष कच्छवे की अगुवाई में दैठणा से पाथरी तक की दो दिन की पदयात्रा निकाली गयी। पदयात्रा का समापन मराठी के जानेमाने कवि इंद्रजीत भालेराव के मार्गदर्शन से हुवा। प्रा. भालेराव ने किसानपुत्र आंदोलन की सराहना करते

पृष्ठ ११ पर

मेरी बात- अम्बाजोगाई, लक्ष्य स्पष्ट हो तो जीवन को दिशा मिलती है

– अनिता कांबळे

मार्च महीने के पहले शनिवार को २ मार्च २०२४ को शाम ५ से ७ बजे तक आंतर भारती शाखा अंबाजोगाई की ओर से नई पहल 'मेरी बात' लॉन्च की गई। इस पहल का पहला पुष्प अनिताताई कांबले द्वारा बुना गया। इस मौके पर उन्होंने अपने बेहद रोमांचक जीवन की कहानी बताई कि कैसे उन्होंने बेहद कठिन और संघर्षपूर्ण प्रक्रिया से अपना जीवन गुजारा। उन्होंने अभिनव पहल 'मेरी बात' में अपने जीवन का परिचय देते हुए कहा कि उन्होंने अपने जीवन में कई कठिनाइयों को पार करते हुए अपनी शिक्षा पूरी की। शिक्षा ने जीवन को नई दिशा दी। जीने की एक नई उम्मीद मिली। उनका जीवन–परिचय सुनने आये श्रोतागण भी उनकी सराहना कर रहे थे। अनिताताई के परिचय के बाद कार्यक्रम में मौजूद दर्शकों ने उनसे कई सवाल पूछे। उन्होंने अमृत महाजन, विद्या लोमटे, वेंकटेश जोशी, पवार मैडम आदि प्रश्नकर्ताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के प्रासंगिक उत्तर दिए।

अनिता कांबळे की जीवनकथा सुनकर धरोटे मंत्रमुग्ध हो गए।

संघर्ष से नई जिंदगी रचने वाली अनु की कहानी रंगीन है। ये अनु हैं, सिंगल महिलाओं का सहारा बनी अनिता ताई कांबळे....

ऐसी यह एक अभिनव पहल

आंतर भारती शाखा अंबाजोगाई की ओर से की गई है। यह गतिविधि प्रत्येक माह के प्रथम शनिवार को आयोजित की जायेगी। 'मेरी बात' पहल की शुरुआत आंतरभारती के सदस्यों को जानने और उनके जीवन से सभी को अवगत कराने के उद्देश्य से की गई है। यह गतिविधि आंतर भारती के सभी सदस्यों और अन्य लोगों के लिए भी खुली है। उक्त गतिविधि के प्रथम भाग में बड़ी संख्या में ग्राम के अधिकारी, सदस्य एवं नागरिक उपस्थित हुए थे।

वेंकटेश जोशी, संयोजक
मेरी बात, अम्बाजोगाई
८६००४ ९७६५०

पृष्ठ १० से आगे

हुये कहा कि, किसानों के साथ दर्द का नाता जोडने का यह उपक्रम काफी माने रखता है। सुभाष जैसे किसानपुत्र ही किसानों की आजादी की लढाई आगे ले जा सकते हैं। उन्होंने साहेबराव करपे की दर्दभरी कहानी सुनाई। इंद्रजीत भालेराव को किसानों का कवि कहा जाता है। इस अवसर पर उन्होंने अपनी रचनाएं सुनाई। पाथरी के निकट एक कॉलेज में पदयात्रा और १९ मार्च के उपवास का समापन किया गया।

– प्रेषक – अमर हबीब

श्रीरामपुर में आंतर भारती की शाखा की स्थापना

आंतर भारती की एक नई शाखा हाल ही में श्रीरामपुर (जिला अहमदनगर) में स्थापित की गई थी।

नई कार्यकारिणी का चुनाव राष्ट्रीय सचिव डॉ. डी एस कोरे और पुणे शाखा सचिव एवं आंतरभारती राजदूत श्री राम माने की उपस्थिति में किया गया।

कार्यकारिणी– अध्यक्ष– प्रिंसिपल सुभाष लिंगायत, **कार्यकारी अध्यक्ष–** प्रो. आदिनाथ जोशी, **उपाध्यक्ष–** डॉ. प्रो. बाबूराव उपाध्याय, **सचिव–** लेविन भोसले, **कोषाध्यक्ष–** शोभा लिंगायत

कार्यकारिणी सदस्य–प्रिंसिपल टी. इ. शेल्के, प्राचार्य शंकरराव अनारसे, प्राचार्य शंकरराव गागरे, सुखदेव सुकळे, प्रोफेसर रावसाहेब आदिक, प्रोफेसर शिवाजी बारगळ, प्रभाकर भोंगळे, प्रदीप धूमाळ, विलास कुलकर्णी, दत्तात्रेय रायपल्ली इ. को निर्विरोध चुना गया।

इस मौके पर राष्ट्रीय सचिव डॉ. कोरे ने आंतरभारती के बारे में जानकारी दी। श्री राम माने ने आंतरभारती द्वारा क्रियान्वित की जा रही विभिन्न गतिविधियों एवं उन्हें क्रियान्वित करने की विधि के बारे में जानकारी दी।

डॉ. प्रोफेसर बाबूराव उपाध्याय ने आश्वासन दिया कि श्रीरामपुर में आंतरभारती शाखा सभी गतिविधियों को अंजाम देगी। इस अवसर पर डॉ. गागरे, प्रो. आदिनाथ जोशी, लेविन भोसले, प्राचार्य शेळके, प्राचार्य अनारसे ने विचार व्यक्त किये। प्रारंभ में आंतर–भारती बोर्ड का अनावरण किया गया। इसके बाद अध्यक्ष सुभाष लिंगायत सर, प्राचार्य शेळके सर द्वारा डॉ. कोरे एवं श्रीराम माने का अभिनंदन किया गया। प्रोफेसर सुभाष लिंगायत ने प्रास्ताविक किया। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर आदिनाथ जोशी ने किया। शहीद अण्णाभाऊ साठे पुरस्कार प्राप्त करने पर सुखदेव सुकळे सर को आंतरभारती की ओर से सम्मानित किया गया। आंतरभारती ट्रस्ट की ओर से डॉ. कोरे सर ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों एवं सभी सदस्यों को फूल देकर बधाई दी। अंत में डॉ. बाबूराव उपाध्याय ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

आंतरभारती ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष पांडुरंग नाडकर्णी और कार्यकारी अध्यक्ष अमर हबीब ने आंतरभारती का काम नए सिरे से शुरू करने के लिए श्रीरामपुर टीम को बधाई दी।

प्रेषक – सुभाष लिंगायत

पुणे आंतर भारती व्याख्यान उपक्रम - १

"देश के समक्ष चुनौतियां और हम"

– पांडुरंग नाडकर्णी

इस विषय पर पांडुरंग नाडकर्णीजी का दिया व्याख्यान; आन्तर भारती पुणे की ऑनलाइन पहल

पुणे (संवाददाता)

देश में शिक्षा का तो प्रसार हो चुका है; किन्तु शिक्षित बेरोजगारी की समस्या दिनोदिन बढ़ती जा रही है।

१९९१ के बाद से देश में उद्योगीकरण बढ़ा। यथा गांव की आबादी घट कर शहरों की आबादी गति से बढ़ रही हैं। आबादी के बोझ से शहरों की समस्याएं बढ़ रही हैं। ये और अन्य कई चुनौतियां आज देश के सामने खड़ी हुई है और हमें बड़ी सतर्कता के साथ इन चुनौतियों का सामना कर समस्याओं के समाधान ढूंढने हैं, ऐसा मार्गदर्शन आन्तर भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष पांडुरंग नाडकर्णी ने अपने व्याख्यान में दिया। वे पुणे आन्तर भारती द्वारा आयोजित ऑनलाइन व्याख्यानमाला की पहली कड़ी में सोमवार दिनांक २६ फरवरी की शाम सम्बोधित कर रहे थे।

उपाध्यक्ष मयूर बागुल के संयोजन से पुणे आन्तर भारती ने इस वर्ष में विविध विषयों पर जाने-माने विशेषज्ञों द्वारा ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित करने का संकल्प लिया है।

इसी शृंखला की पहली कड़ी में देश के समक्ष चुनौतियां और हमारी भूमिका'' इस विषय को लेकर युवा मामले और सामाजिक कार्य के वरिष्ठ विशेषज्ञ तथा आन्तर भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष पांडुरंग नाडकर्णी ने कई बातों पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम की शुरुआत में सचिव राम माने इन्होंने प्रमुख वक्ता पांडुरंग नाडकर्णी का परिचय दिया। तत्पश्चात नासिक की नन्ही कलाकार इच्छा भंवर ने अति मनोहारी नृत्य प्रस्तुत कर सब का मन मोह लिया।

आगे अपने संबोधन में नाडकर्णी ने कहा कि देश की राजनीतिक स्थिति भी अस्थिर हुए जा रही हैं। सत्ता पक्ष विपक्ष को अनेक प्रकारों से कमज़ोर किए जा रहा हैं। भ्रष्टाचार चरम पर जा रहा हैं किन्तु प्रसार माध्यम चुप्पी साधे हुए हैं। किसानों की समस्याओं पर सरकारों की ओर से सहानुभूतिपूर्वक समाधान नहीं दिए जा रहे हैं। न्यायिक प्रक्रियाएं पारदर्शी काम करते नज़र नहीं आ रही हैं, ऐसा साधारण जनता को अनुभव होता जा रहा है। इन सभी समस्याओं पर आज के युवावर्ग को बड़ी सजगता से विचार करते हुए अपने यथाशक्ति प्रयासों द्वारा समाधान पाने होंगे। गांधी जी की बुनियादी शिक्षा और मूल उद्योगी शिक्षा प्रणालि का सही मायनों में अध्ययन करते हुए भी आज की कई समस्याओं के समाधान खोजे जा सकते हैं, ऐसा सुन्दर मार्गदर्शन नाडकर्णी ने किया।

पृष्ट १५ पर

पुणे आंतर भारती व्याख्यान उपक्रम – २

देश को 'देश' बनाना सबसे बड़ी चुनौती

– अमर हबीब

पुणे (संवाददाता):

आज की सबसे बड़ी चुनौती देश को राष्ट्र बनाना है। स्वदेश निर्माण की नींव सबसे पहले शिवाजी महाराज ने रखी थी। महात्मा फुले, राजा राममोहन राय आदि समाज सुधारकों ने सामाजिक भेदभाव को दूर करने का प्रयास किया। गांधीजी ने भारत में बड़े पैमाने पर देशभक्ति की अलख जगाई।

देश क्या है? एक देश सिर्फ एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं है बल्कि उस क्षेत्र में रहने वाले लोगों की एक साथ रहने की दृढ़ इच्छाशक्ति से बनता है। गांधी जी की हत्या देश को राष्ट्र बनाने में पहली बाधा थी। यदि गांधीजी कुछ वर्ष और जीवित रहते तो भारत के एक राष्ट्र बनने की बाधाएं दूर हो सकती थीं। एक और बाधा स्वतंत्रता के बाद की सरकारों द्वारा किए गए संवैधानिक संशोधनों द्वारा पैदा की हुई थी। तीसरी बाधा बनी हमारी चुनावी व्यवस्था। अमर हबीब ने व्याख्यान में आगे कहा कि हमारी चुनाव प्रणालि में आमूलाग्र परिवर्तन होना चाहिए। वोटिंग एक की बजाय सात दिन होनी चाहिए, ताकि वोटिंग भावनाओं पर आधारित न हो। किसी भी प्रतिनिधि को दो कार्यकाल से अधिक अवसर नहीं दिया जाना चाहिए। 'नोटा' वोटों की गणना चुनाव नतीजों में होनी चाहिए। आधे प्रतिनिधि राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर निर्वाचित होने चाहिए। उन्होंने प्राथमिकताक्रम चुनाव प्रणाली लागू करने की बात कही।

धर्म पर आधारित राष्ट्र की अवधारणा पुरानी हो चुकी है। विश्व की वर्तमान स्थिति पर नजर डालें तो यह स्पष्ट है कि धर्म के आधार पर बने देश कभी प्रगति नहीं कर सकता। ऐसे विचार आंतर भारती के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष अमर हबीब ने व्यक्त किये। शनिवार शाम पुणे आंतरभारती द्वारा आयोजित एक ऑनलाइन व्याख्यान शृंखला में वे बोल रहे थे। विषय था–देश और हमारे समक्ष चुनौतियाँ।

आगे संबोधित करते हुए अमर हबीब जी ने कहा कि वर्तमान शासक तानाशाही की ओर बढ़ रहे हैं। वे लोगों के मन में भेदभाव फैला रहे हैं। हमें डर है कि हम आने वाली पीढ़ी को किस और कैसे देश को सौंपेंगे। लोगों के मौलिक अधिकारों को संकुचित किया गया है। हमारी चुनावी प्रणाली लोकतंत्र नहीं, बल्कि बहुमतशाही शासन स्थापित करती है; इसका परिणाम लोगों को भुगतना पड़ रहा है।

अमर हबीब ने आगे कहा कि

पृष्ठ २० पर

साने गुरुजी की शतकोत्तर रजत जयंति के अवसर पर

यही वह दर्शन है जो जीवन को कृतज्ञ बनाता है

श्री रामकृष्ण परमहंस ने हिंदू धर्म का युगधर्म स्वरूप दिखाया। विवेकानन्द ने शिकागो में सिद्ध कर दिया कि सार्वभौम धर्म–विश्वधर्म–हिन्दू धर्म ही हो सकता है। इसका मतलब दूसरे धर्मों का हिंदूकरण करना नहीं, बल्कि दूसरे धर्मों के प्रति उदार होना है। सभी धर्म मूलतः भाईचारा, सार्वभौमिक परिवार की शिक्षा देते हैं। सर्व धर्म समभाव का अर्थ है सर्व धर्म समभाव। इसलिए रामकृष्ण परमहंस चर्च मस्जिद हर जगह गए और साक्षात्कार किए। रामकृष्ण परमहंस, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी मेरे आदर्श हैं। मेरे पास रामकृष्ण की भक्ति, रवीन्द्रनाथ की कविता और गांधीजी की सेवा भावना का थोड़ा सा मिश्रण है। हृदय सबके प्रति भक्ति और प्रेम से भरा होना चाहिए, होठों से मधुर गीत गुनगुनाना चाहिए और हाथ थोड़ी सी सेवा में रममाण होने चाहिए। ये तीनों मेरी क्षुधा हैं। जब ये तीनों वृत्तियाँ संतुष्ट हो जाएंगी तो मैं संतुष्ट हो जाऊँगा। हमारा आदर्श पत्थर क्यों है? यह तो समझ में आता है कि लोगों को अपने दुख से दुखी और अपने सुख से खुश नहीं होना चाहिए। लेकिन क्या सामाजिक पीड़ा के प्रति सहानुभूति नहीं होनी चाहिए? इतने सारे लोगों का दिमाग सुन्न हो जाना आदर्श क्यों है? इस प्रकार का दर्शन पत्थर का दर्शन है – पत्थर का दर्शन ! विवेकानन्द रामतीर्थ का दर्शन जीवनसार्थकता का दर्शन है। लोकमान्य तिलक का कर्म योग दर्शन जीवनसार्थकता का दर्शन है। – **साने गुरुजी**

– संग्रह –

दीनानाथ अनंत रत्नपारखी

९०७५५२००८३

पृष्ठ १२ से आगे

मुख्य व्याख्यान के उपरान्त प्रश्नोत्तर का सत्र हुआ। मराठी साहित्यिक लक्ष्मीकांत देशमुख ने इस दिशा में आन्तर भारती की भूमिका पर प्रश्न किया। आन्तर भारती इस दिशा में निरन्तर जनता के सहयोग की भूमिका में रहेगी तथा देश के समग्र निर्माण में आन्तर भारती युवाओं को मानसिक रूप से प्रशिक्षित करती रहेगी, ऐसा उत्तर में नाडकर्णी जी ने कहा।

इस व्याख्यान में कार्याध्यक्ष अमर हबीब, उपाध्यक्ष संगीता देशमुख, डॉ. डी एस कोरे (सचिव), अंजली कुलकर्णी (अध्यक्ष, पुणे), संजय माचेवार, अर्चना भंवर, आरीफ बेग, अलाउद्दीन सय्यद, हेमलता जाधव, सुभाष लिंगायत, रोहित कांबले, नत्थू शाह, जगदीश जाजू, भास्कर पाटील आदि की उपस्थिति थी।

साहसी विवाह की बात

– माधव बावगे

अंनिस ने आजतक १२० विवाह करवाए । उन जोडियों के पीछे सामाजिक तथा आंदोलन का बल साथ खडा करने का प्रयत्न किया । प्रत्येक विवाह की एक स्वतंत्र कहानी है । उनकी हरेक की एक एक मालिका हो सकती है । परन्तु कुछ निश्चित उदाहरण ही सामने रख रहा हूँ । लडका मराठा लडकी मुस्लिम निजी नौकरी में एक साथ मिले । विवाह कैसे करें यह उनके सामने प्रश्न उपस्थित हुआ । अंनिस की ओर से आन्तरजातीय सत्यशोधक विवाह कराए जाते हैं । यह लडके को पता था । उसका चचेरा भाई हमारे आंदोलन से संबधित था तथा मेरे परिवार का सदस्य है उसे मालूम था । मुझे पूछने पर मैं उसके चचेरे भाई को कहूंगा, यह उसे डर था । एक दिन निश्चित करके लडका मेरे पास आया । वह बोला, 'सर मुझे आपसे व्यक्तिगत बात करनी है । अगर आप पूरी तरह गुप्त रखते होंगे तो मैं बोलता हूँ अन्यथा नहीं ! मैंने कहा, १०० प्रतिशत गुप्त रखूंगा । उसने कहा,सर मुझे आन्तरजातीय-आन्तरधर्मीय विवाह करना है । मार्ग नहीं मिल रहा । दोनों की जाति व धर्म अलग है । दोनों के घर में पूछने पर सम्मति नहीं मिलनेवाली है । इसलिए आपकी सहायता चाहिए । मैंने अंनिस की पध्दति बताई । वह उन्हें स्वीकार थी । एक दिन लडका लडकी मेरे घर आए । चर्चा तथा मौखिक-लेखिक मुलाकात हुई । कागजपत्रों की पूर्ति हुई, दिनांक, समय, स्थान निश्चित हुआ । लडके की अडचन थी कि विवाह के बाद कहाँ रहें ? मैंने लडका लडकी से चर्चा की लडके को कुछ दिनों के बाद पूना में नौकरी मिलने वाली थी । विवाह करना, मंगलसूत्र, सारे कागजपत्र, फोटो मेरे पास रखना लडका लडकी के घर जाएगा । लडकी लडकी के घर जाएगी । फिर लडका पूना जाएगा । प्लॅन निश्चित हुआ विवाह ३-३-२०११ की शाम ६ बजे हॉटेल अंजनी में अंनिस के कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में हुआ । नगरपालिका में नोंदणी दर्ज किया । लडके को पूना में नौकरी लगी । लडके ने पूना में कमरा देखा । दोनों ने पूना जाने का निश्चय किया । जाते समय मेरे पास जो विवाह की तसवीरे, नोंदणी प्रमाणपत्र, मंगलसूत्र कागजपत्रों के दो गठ्ठे उन्हें दिए तथा वे दोनों ही पूना गए । डॉ. दाभोलकर ने

पूना में उनका स्वागत एक समारोह में किया । पुलिस कमिशनर को कहकर उन्हें संरक्षण मिले ऐसी व्यवस्था भी की मेरे बताई हुई पध्दति से दोनों ने एक अर्ज लातूर एस.पी. के नाम से फॅक्स की । उसमें कहा कि हम दोनों ही सुशिक्षित समझदार हैं, दोनों ने निश्चित करके सब सोचकर अंनिस की ओर से आंतरधर्मीय विवाह किया है और उसका नोंदणी प्रमाणपत्र साथ में जोडा है ।

दोनों को खोजते हुए लडकी के घर वाले १०-१५ मुस्लिम सज्जन लडके के घर गए । लडका कहाँ है ? लडके के घर पर भी जानकारी नहीं थी । तनाव का वातावरण हो गया । लडकी के रिश्तेदार लडकी को निरन्तर फोन करने लगे । एक दिन लडकी ने फोन उठाया । उसने कहा, मैंने विवाह किया है, मैं सुखी हूँ मेरी कुछ चिन्ता मत करो और घर से आया फोन उठाना बन्द किया । तीसरे दिन सूचना आई, तू कहाँ है? तेरे विवाह की बात सुनकर मां को अटैक आया है। मां सीरियस है, अतिदक्षता विभाग मैं दवाखाने में एडमिट किया है । लडकी तथा लडके का मुझे फोन आया, सर समाचार घर पर समझते ही मां को अटैक आया है । मां का कुछ अच्छा-बुरा हुआ तो मेरी वजह से हुआ ऐसा लगेगा इसलिए हम दोनों मिलने लातूर आते हैं । ऐसा उन्होंने मुझे फोन किया । मैंने कहा, मैं देखकर तुम्हें सूचित करता हूँ क्योंकि झूठ होने की संभावना है । सचमुच मां को अतिदक्षता विभाग में पलंग पर लिटाया हुआ था । यह हमने उन्हें सूचित किया । दोनों ने मिलने आने का कहा तब मैंने कहा, तुम दोनों फिर एक अर्ज का फॅक्स एस.पी. को भेजो । हमें अडचन आई तो पुलिस की मदद चाहिए ऐसा कहो और आओ दूसरे दिन प्रातः दम्पति मेरे घर उतरे वैजनाथ कोरे जी की गाडी में उन दोनों को हम दवाखाना लेकर गए । तब दवाखाने के सामने १५-२० मुस्लिम भाई एक तरफ दूसरी तरफ १५-२० मराठा बंधू, तनावपूर्ण वातावरण था । हम थोडी देर ठहर कर 'अडचन आई तो फोन करना' कहकर वापस गए । वास्तव में मां को अटैक नही आया था । डॉक्टर से मॅनेज करके अति दक्षता विभाग के पलंग पर मां को सुलाया था । लडका लडकी देखते ही मां उठकर बैठ गई । फिर कट्टरपंथी उनपर टूट पडे । दोनों को बहुत धमाकियां दी । हो गया सो हो गया, अब दोनों का विवाह हुआ है यह भूल जाओ एक दूसरे से मिलना जुलना हुआ है, अपनी अपनी जाति में विवाह कराया । उनसे १०० रू. के बॉन्ड पर यह विवाह रद्द किया जाता है ऐसा निश्चित कर १०-१५ मुस्लिम बन्धु मेरे

पास राजर्षी शाहु कॉलेज के कार्यालय में आए। चर्चा करने लगे। मैंने उनसे शान्ति से चर्चा की, उन्हें समझाकर कहा। उन्हें चाय पिलाई। उन्होंने कहा सर उनके कहने पर आपने विवाह करवाया पर अब वे दोनों मना कर रहे है। उन्हें पश्चाताप हुआ हैं। इसलिए एक १०० रूपयें के बॉन्डपर आप लिख कर विवाह रद्द करें। मैंने कहा, यह विवाह वे हमारे पास आए और विवाह कराया ऐसा नहीं है अपितु लडकी–लडका से स्वतंत्र हमने चर्चा की की दोनों को इकटठा बिठाकर चर्चा की। भविष्य के परिणामों की जानकारी भी दी। तब वे बोले, हम या तो विवाह करेंगे या दोनों एक दूसरे के लिए एकसाथ मर जाएंगे अब वे अचानक कैसे नहीं बोल सकते हैं? मैं तुम्हारे सामने उन्हें बुलाता हूँ उन दोनों को बुलाया गया मैंने लडका तथा लडकी दोनों से पूछा कि तुम दोनों ने मेरे सामने फिर फिर क्या कहा? क्या लिखकर दिया प्रतिज्ञापत्र पर और अब ऐसा कैसा पश्चाताप हुआ ? तब मुझे लडकी बोली, सर हमें उन्होंने तुम अगर विभक्त अलग नहीं हुए तो मार डालेंगे नहीं तो हम हमारा कुछ भी कर लेंगे ऐसी धमकी दी इसलिए डर के मारे तथा वहाँ से निकलने के लिए हमने ऐसा कहा, तब लडकीवाले लोगों से मैंने कहा, अंनिस की तरफ से मैंने यह विवाह किया है। मैं तलाक नहीं दे सकता। तलाक कोर्ट से मिलता है। उसके लिए कम से कम एक वर्ष दोनों को अलग रहना पडेगा। अलग रहने के सबल प्रमाण देने होंगे। अब १०० रू. बॉन्ड पर लडका लडकी से लिखा कर वह बॉन्ड कोर्ट में प्रस्तुत करके तलाक नहीं मिलेगा अपितु लडका लडकी को कोर्ट में बुलाकर पूछताछ करेंगे। कोर्ट में लडकी तथा लडके ने ऐसे ही उत्तर दिए तो कोर्ट लडकी को लडके के साथ भेजकर तुम्हें दंडित करेंगा।

तब तू हमारे लिए मर गई, तेरा मुंह नहीं देखना, ऐसा कहकर वे लडकी के रिश्तेदार लडकी की मां को दवाखाने से घर वापिस ले गए।

धर्मराज हल्लाले के मध्यस्थी ने लडके के घरवालों को समझाकर कहा तो लडके के घरवालों ने दोनों को स्वीकार कर लिया। अब एकदम आनन्द से अच्छे तरीके से जीवन चला रहे है, अंनिस के उपक्रमों में सहभागी होते हैं अभी अभी उन्हें एक बच्चा भी हुआ है। उनका सब लोगों ने आदर्श ले ऐसा जीवन जी रहे हैं। और परिवार वाले तथा रिश्तेदार उसे अपनी बेटी जैसा स्थान दे रहे हैं। उसे पीहर की तथा मां बाप की याद ही न आए ऐसा उस लडकी से व्यवहार करते हैं। जिससे वह लडका तथा लडके से

ज्यादा उसके मां–बाप रिश्तेदार अभिनन्दन के पात्र है ।

----*****-----

बालिका हिप्परकर, उम्र २९, दिखने में सुन्दर मराठा समाज की लडकी जन्म पत्रिका मुहूर्त देखकर और विशेष बात यह कि रिश्तेदारों में विवाह ठहराकर अपनी संस्कृति, रीतिरिवाजानुसार विवाह किया । प्यारी सी एक लडकी हो गई, बाद में उसको कष्ट देने लगे । तलाक तक बात चली गई । कोर्ट से नियमानुसार तलाक हो गया, बची के पालन के लिए एक लाख रूपये पति ने पत्नी को देना ऐसा आदेश कोर्ट ने दिया । पति ने एक लाख रुपये दिए । वह उसके नाम पर फिक्स राशि कर दी । लडकी बचे के साथ मां बाप के पास रहने लगी । बाद में मां बाप को अपनी कन्या भार लगने लगी । तब लडकी ने कुछ खासगी नौकरी करके मां बाप का भार कम करने के उद्देश्य से एक दवाखाना में पेशेंट नाम लिखने की नौकरी स्वीकार की । पति ने छोड दिया, मां बाप ठीक देखते नहीं, यह अपनों तथा दूसरों को पता चला तब समाज के क्षुद्र विचारों वालों द्वारा बेसहारा महिलाओं के साथ जैसे कृत्य किए जाते हैं उन सबका उसे सामना करना पडा ।

उसी दवाखाने में सतीश चव्हान नाम का वडार समाज का लडका करता था। वह मेरे नानकों की तरफ का था । अंनिस के विचारों का था । सत्यशोध, प्रज्ञा परीक्षा, निबंध, लेखन, वक्तृत्व स्पर्धा में सहभागी था। एक दिन उन दोनों की एकान्त में बातचीत हुई । उसकी करूण कहानी सुन उसके मन में विचारों का कहर उठा । वह उस लडकी को लेकर मेरे पास आया । सारी वास्तविकता बताई । मैं घटना सुनकर सिहर गया । वेदना से नाता जोडने के बाबा आमटे के संस्कार तथा अंनिस के माध्यम से मुझ पर हुए संस्कारों के कारण क्या कर सकेंगे, यह विचार आए । सतीश ने सोच कर मुझसे कहा, उसे आधार देने के लिए तथा उसके जीवन में आनन्द लाने के लिए मैं उससे विवाह करने तैयार हूँ लडकी ने भी स्वीकृति दी । आगे का प्रश्न, दोनों के परिवार वालों की मानसिकता का क्या ? दोनों को घर में पूछने के कहा । दोनों घरों में कट्टर विरोध लिए लडके के पिता मेरे सहपाठी तथा बचपन के मित्र थे । लडकी का मामा सतीश को जानता था । लडकी के मामा ने अनुकूलता दिखाई परंतु प्रत्यक्ष सामने नहीं आते थे । अंत में दोनों के परिवार वालों की सम्मति के बिना अंनिस की तरफ से आंतरजातीय सत्यशोधक विवाह दिनांक २–१–२०११ को हुआ ।

पद्धतिनुसार नगरपालिका में दर्ज किया गया। विवाह के बाद तुरन्त लडके को आरोग्य विभाग की प्रयोगशाला में तंत्रज्ञ की नौकरी लग गई। दोनों नौकरी के ग्राम में घर लेकर रहने लगे। मैंन बीच बीच में समाचार लेता रहता था, मिलता भी था उन्हें जि.प.। समाजकल्याण कार्यालय की तरफ से मिलने वाली ५०,००० रू की मदद के लिए अर्ज दी। उन्हें शासन की ५०,००० रु. की मदद भी मिली। उन्हें एक प्यारी सी कन्या भी हो गई है। अब पहले की, एक तथा इन दोनों की एक। दोनों को अपनी बेटी समझकर आनंद से जीवन जी रहे हैं। लडके के पिता ने मुझे सहपाठी होने के कारण पूछा मैंने उन्हें समझाकर कहा, बच्चों की खुशी में खुश होओं, ऐसा कहा। वह भी बात उन्होंने सुनी, लडकी के परिवारवालों को भी स्वीकार किया। वह अब सुखी जीवन जी रही है। शासन से अब एक ही प्रार्थना है, उनकी नौकरी पक्की कर दे। सतीश के मां बाप सचे अर्थों में अभिनंदन के पात्र हैं। लडके की खुशी में अपनी खुशी मानी इस आदर्श को अन्य युगलों के मां बाप को रिश्तेदारों को स्वीकारना चाहिए, ऐसा प्रामाणिकता से लगता है।

हिन्दी भाषान्तर : मधुश्री आर्य

मो. ६३७७२३७१६०

पृष्ठ १४ से आगे

पुनर्जागरण के बाद धर्म और सत्तता अलग हो गये। शिवाजी महाराज की नीतियां, महात्मा फुले की शिक्षाएं, महात्मा गांधी के विचार और कार्य की दिशा और साने गुरुजी के मूल्यों को आगे बढ़ाने से यह राज्य एक देश बनेगा। कोई देश वास्तव में तभी देश बन सकता है जब दुनिया के वास्तविक सर्जक महिलाओं और किसानों को स्वतंत्रता दी जाए। इस प्रकार अमर हबीब जी ने प्रभावी मार्गदर्शन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत उदगीर के बाल कलाकार अर्णव बिरादर के मधुर मराठी भाव गीत ''केंव्हा तरी पहाटे'' से हुई। हितेंद्र चौधरी ने मुख्य वक्ता अमर हबीब जी का परिचय दिया।

कार्यक्रम का संचालन मयूर बागुल ने किया। कार्यक्रम की सफलता के लिए पुणे आंतर भारती के सचिव राम माने, राष्ट्रीय सचिव डॉ. डी एस कोरे, पुणे शाखा अध्यक्ष अंजलि कुलकर्णी आदि ने कड़ी मेहनत की। इस अवसर पर आंतर भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष पांडुरंग नाडकर्णी, संगीता देशमुख, मनीषारानी आर्य, संजय कुमार माचेवार, अमृत महाजन, आरिफ बेग, नत्थूशाह फकीर, प्राचार्य सुभाष शास्त्री, देश के विभिन्न हिस्सों से बीरबल यादव, शिवलिंग मठपति, नरसिंह देशमुख , रामकृष्ण अप्पा रुद्राक्ष, अलाउद्दीन सैयद आदि ऑनलाइन उपस्थित थे।

सर्वधर्म-समभाव = सहयोग संवाद

– रमेशचंद शर्मा

गतांक से आगे – सर्व–धर्म–समभाव का अर्थ है आप अपनी आस्था, विश्वास को मानते हुए दूसरे की आस्था, विश्वास को चोट नहीं पहुंचाओ। सबको अपनी–अपनी तरह से अपनी– अपनी आस्था, विश्वास को रखते हुए दूसरे की आस्था, विश्वास का सम्मान करना है। हम कोई ऐसा कदम, तरीका नहीं अपनाए जो दूसरे, सामने वाले को दुःख, हानि, नुकसान पहुंचाए। सभी धर्मों का हो सम्मान, मानव मानव एक समान। एक दूसरे की आस्था, विश्वास को जानें, समझें, पहचानें। उनसे संपर्क संवाद कायम करें। यथासंभव एक दूसरे के पर्व, त्योहार, कार्यक्रम में शामिल हों। एक–दूसरे को जानें, समझें, पहचानें। आपसी मेलजोल बढ़ाएं। परस्पर मित्रता बढ़ाएं। सभी धार्मिक स्थल सम्मान योग्य है। उनके प्रति तहेदिल से सम्मान व्यक्त करें। अफवाह, झूठ, दुष्प्रचार से बचें। साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता, रूढ़ी, दिखावा, मैं या मेरा ही श्रेष्ठ, अहम्भाव असुरक्षा, भय पैदा करता है। यह भाव, मानसिकता अपने समूह तक सीमित रहने का आग्रह रखता है। कट्टरता, संकुचन बढ़ाता है। समाज में अलगाववाद को बढ़ावा देता है। सभी समूह में अच्छाईयां, मजबूती, बुराईयां, त्रुटियां, कमजोरी मौजूद है। अपने समूह, धर्म की कमजोरियां दूर करें, हटाएं। दूसरे समूह, धर्म के गुणों को देखें, समझें। उसे मान्यता, सम्मान दें। अपनी बुराई तथा दूसरे की अच्छाई पर गौर करें।

बुराई और बुरा, पाप और पापी, अन्याय और अन्यायी, जुल्म और जुल्मी, दोष और दोषी, अत्याचार और अत्याचारी दोनों अलग–अलग है। हमें बुराई, पाप, अन्याय, जुल्म, दोष को हटाना, समाप्त करना है। बुरे, पापी, अन्यायी, जुल्मी, दोषी, अत्याचारी को बदलना है। उसमें बदलाव लाना है। बदला नहीं बदलाव चाहिए। इससे ही समाज, देश – दुनिया में सुधार संभव है। इतिहास में तथा अपने समय में भी बदलाव के अनेक प्रेरक प्रसंग, उदाहरण हमारे समक्ष है। इनसे हमें प्रेरणा लेकर हिम्मत, विश्वास के साथ इस विचार को बढ़ावा देना होगा। अन्याय, अत्याचार, हिंसा, द्वेष, असमानता, बुराई, भय को दूर करना और न्याय, करुणा, प्रेम, अहिंसा, सत्य, निर्भय, समतामय समाज बनाना हमारा कर्तव्य है। इसका प्रयास ही हमारी राह है।

व्यवहार की दुनिया में सत्य, धर्म, ईश्वर, प्रेम, करुणा, सद्भावना, सौहार्द, साझापन, एकता, सहयोग, सहकार, संवाद, संपर्क को सहज, सरल, सुलभ बनाना ही सर्व–धर्म–समभाव का सही रास्ता है। यह व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन दोनों में सहायक है। व्यक्तिगत मोक्ष और समाज कल्याण का रास्ता अलग नहीं है। प्रकृति के नियम सभी पर समान रूप से लागू है। शास्त्रज्ञ एवं वैज्ञानिक दोनों ही सत्य

पर आधारित हो। अध्यात्म और विज्ञान दोनों को ही सत्य की राह पर चलना है तभी विश्व की सही दिशा एवं दशा में सुधार संभव है। कारण और परिणाम का अटूट संबंध है। भौतिक और पराभौतिक दोनों में अनुशासन, प्रयोग विधि, उपकरण आदि की जरूरत है। भौतिक और आध्यात्मिक दोनों में सत्य, कर्तव्य, करुणा, सदभावना, प्रेम की आवश्यकता है।

अब हम हम कुछ महापुरुषों के वचन भी याद करें। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा है कि धर्म मनुष्य को एक दूसरे से अलग नहीं करता बल्कि उन्हें एक साथ मिलाकर रखता है। इसलिए सभी धर्म एक दूसरे के साथ मिलकर काम करें। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि हिन्दू धर्म इस्लाम या गैर हिन्दूओं के प्रति नफरत की शिक्षा देता है तो उसका विनाश निश्चित है।

डॉ राममनोहर लोहिया– हिन्दू धर्म में कट्टरपंथियों का जोश बढ़ने पर हमेशा देश सामाजिक और राजनीतिक दृष्टियों से टूटा है और भारतीय राष्ट्र में राज्य और समुदाय के रूप में बिखराव आया है।

स्वामी विवेकानंद–संकीर्णतावाद, कट्टरतावाद और उसके बीभत्स उत्तराधिकारी धर्मोन्माद ने इस सुंदर धरती पर बहुत दिनों तक राज किया है। उसने इस धरती को हिंसा से भर दिया है। उसे बार–बार मानव रक्त से नहलाता रहा है। सभ्यता को नष्ट कर दिया है। यदि ये भयावह दानव नहीं होते, तो मानव समाज ने जितनी प्रगति की है। उससे और अधिक प्रगति की होती।

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन यह प्रवृत्ति कि सत्य हमारा ही एकाधिकार है, मानव धर्मों के सर्वोच्च रूप में निहित उदारता से मेल नहीं खाता। फिर प्रत्येक महान धर्म ने दूसरों से भी सीखा है। यदि धर्म को फिर से वही प्राणदायी शक्ति प्राप्त करनी है जो किसी जमाने में समाज का निर्माण करने में उसकी थी, तो धर्मों की प्रतिस्पर्धा की जगह उनके बीच के सहयोग को देना होगा।

संत विनोबा भावे– जिसके चरित्र में ईमान न हो, आचरण में अहिंसा न हो, व्यवहार में धर्म न हो, वह आस्तिक नहीं हो सकता।

गणेश शंकर विद्यार्थी धर्म और ईमान तो मन का – सौदा है। आत्मा को सुदृढ़ करने और ऊंचा उठाने का साधन है। शुद्ध आचरण और सदाचार ही धर्म के स्पष्ट चिन्ह है। उपरोक्त पंक्तियां आज के हालात में समन्वयकारी समभाव का सबक देती हैं। मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर ने बांट दिया भगवान को, धरती, बांटी, अम्बर बांटा, मत बांटो इंसान को। नेता ने सत्ता के खातिर कौमवाद से काम लिया, धर्म के ठेकेदारों से मिलकर लोगों का ना काम किया। सर्व धर्म समभाव का विचार आचरण में आ जाए तो दुनिया को हिंसा, नफरत, द्वेष, भेद, भय से मुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। आत्मबल, आत्मिक बल को पशु बल, बाहु बल से नहीं जीता जा सकता है। सत्य, प्रेम, करुणा की शक्ति सच्ची, सही शक्ति है। यह क्रियात्मक, सक्रिय शक्ति है। इसे जागृत करने की आवश्यकता है। प्रेम से सृष्टि होती है, वैर से विनाश। सर्व–धर्म–समभाव के लिए सख्य, सहयोग, संवाद की राह अपनाकर हम आगे बढ़ सकते हैं। – नई दिल्ली

समाचार भारती

आंतर भारती (मराठी) दीपावली अंक को "प्रसादबन उत्कृष्ट दिवाली अंक" पुरस्कार

नांदेड : नांदेड में नियोजन भवन, जिलाधिकारी कार्यालय में पद्मश्री अभय बंग के शुभहस्तों से आंतर भारती की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा संगीता देशमुख को आंतर भारती (मराठी) दीपावली अंक के संदर्भ में प्रसादबन उत्कृष्ट दीपावली अंक से पुरस्कृत किया। (फोटो कवर पृष्ठ ४ पर) इस अंक के संपादक मा. लक्ष्मीकांत जी की अनुपस्थिति में संगीता देशमुख ने इसका स्वीकार करते हुए धन्यता का अनुभव किया।

इस अवसर पर नांदेड के अनेक गणमान्यों के साथ आंतर भारती के संजय माचेवार, प्रमोद शातलवार शिवाजी सूर्यवंशी, नीलकंठराव जाधव आदि उपस्थित थे।

समाचार भारती

अमरावती में साने गुरुजी के शतकोत्तर रजत जयंति वर्ष में विशेष कार्यक्रम

अमरावती : राष्ट्रसेवादल, अमरावती जिला शाखा एवं पूज्य गुरुजी के विचारों से प्रेरित समविचारी संस्थाओं की ओर से उपर्युक्त विशेष अवसर पर अनेक उपक्रम, स्पर्धा , व्याख्यान, यात्रा, सम्मेलन , शिविर ,संचारी पोस्टर प्रदर्शन, कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर इ. के. आयोजनार्थ दि. २९-३-२०२४ को सहयोग बिल्डिंग व्ही.एम.व्ही रोड, नवसारी , अमरावती में बैठक लेकर विशेष चर्चा हुअी। बैठक राजाभाऊ महाजन, (ज्येष्ठ कार्यकर्ता राष्ट्र सेवा दल) की अध्यक्षता में नियोजित थी। आयोजकों में भारत कल्याण कर , डॉ. दिलिप काळे, गोपालराव कोरडे, प्रा. सुधाकर गौरखेडे, प्रा. संदीप तडस, मायाताई वाकोडे, अकाश इंगळे, मंगेश खेरडे, डॉ. शांताराम चव्हाण, तथा विठ्ठलराव ठाकरे विशेषतः प्रयत्नरत हैं।

आंतरभारती ट्रस्ट (दिनांक :१ एप्रिल २०२४) वार्षिक आमसभा की नोटीस

आंतरभारती ट्रस्ट की वार्षिक आम सभा दिनांक १०/०५/२०२४ को सुबह ११.०० बजे बालभारती विद्यामंदिर सभागृह, रायबंदर, गोवा में आयोजित की गयी है। इस आमसभा में सभी आजीवन सदस्यों को उपस्थित रहने का निवेदन है।

सभा की विषय–पत्रिका:

१. पिछले (१० मई २०२३) वार्षिक आमसभा का इतिवृत्त पढना और उसे मान्यता देना ।

२. आंतरभारती ट्रस्ट की ओर से मंजूर किया गया ०१ एप्रिल २०२३ से ३१ मार्च २०२४ का कार्य वृतांत पढकर उसे मंजूरी देना।

३. लेखा परीक्षक से प्रमाणित किया हुआ और आंतरभारती ट्रस्ट से संमत–शिफारिश किया हुवा दिनांक ०१ एप्रिल २०२२ से ३१ मार्च २३ तक का ऑडिट रिपोर्ट आमसभा में रखना और उसे मंजूरी देना।

४. आंतरभारती ट्रस्ट का ०१ एप्रिल २०२४ से ३१ मार्च २०२५ का बजेट पेश करना और उसे मंजूरी देना।

५. आंतरभारती के भविष्यकालीन कार्य एंव कार्यक्रमों का ब्यौरा रखना और उसे मंजूरी देना।

६. अन्य विषय पर मा. अध्यक्ष की मान्यता से चर्चा करना।

कृपया आमसभा की बैठक में उपस्थित रह कर सभा में संमिलित होने हेतू निर्धारित दिनांक, स्थान एवं समय पर उपस्थित रहने की विनती हैं।

विशेष सूचना:

कोरम के अभाव के कारण आमसभा स्थगित होने पर आधा घंटे के पश्चात पुन्हा उसी स्थान पर आम सभा संपन्न की जाएगी जिसमें कोरम की कोई आवश्यकता नही होगी ।

सचिव– आंतरभारती ट्रस्ट

अध्यक्ष– आंतरभारती ट्रस्ट

किसानों की आत्महत्या- संवेदनार्थ लाखों का १९ मार्च को उपवास - किसानपुत्र आंदोलन- कुछ झांकियाँ !

पाथरी

मूर्तिजापुर

अकोला

उदगीर

श्रीरामपुर आंतर भारती (कार्यकारिणी) शाखा स्थापना

नांदेड में आंतर भारती (मराठी)
दिवाली अंक को प्राप्त ' प्रसादवन उत्कृष्ट दिवाली
अंक पुरस्कार ! डॉ. अभयजी बंग के शुभहस्तों से आं.भा.
राष्ट्रीय उपाध्यक्षा संगीता देशमुख ने स्वीकार किया ।

नांदेड पुरस्कार समारोह में संगीता देशमुख ने
डॉ. अभय बंग को आंतर भारती
दिवाली अंक (मराठी) भेट दी ।

मेरी बात – अंबाजोगाई

अनिता कांबळे (व्याख्यान संपन्न)

संतोष मोहिते (व्याख्यान ७ अप्रैल को)